राष्ट्रभाषा हिंदी

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

- भूमिका ६
- ग्रंथके ज्ञानसंबंधी सूक्ष्म-विश्वके 'एक विद्वान' द्वारा भाष्य ७
- 'सूक्ष्म' शब्दके संदर्भमें कुछ संज्ञाओंका अर्थ १०
- कुछ आध्यात्मिक संज्ञाओंका अर्थ ११
- ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंका परिचय १२
- संस्कृत भाषानुरूप हिंदी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन ! १४

अध्याय १ : राष्ट्रभाषा हिंदी

१. अर्थ १५

२. निर्मिति १५

३. महत्त्व १६

* राष्ट्रभाषा अर्थात राष्ट्रका मनोमयकोष १६
* राष्ट्रकी एकता हेतु हिंदीका महत्त्व १६

४. हिंदीकी विशेषताएं १८

५. हिंदीपर उर्दू भाषाका आक्रमण ! १८

* हिंदी एवं मुसलमान २०
* गांधीजीका उर्दूप्रेम २३
* मां को अंग्रेजीमें पत्र लिखनेवाले नेहरू ! २५
* कांग्रेसका उर्दूप्रेम २६
  * हिंदी भाषाको द्वितीय स्थान देनेवाली कांग्रेस संस्कृति २९
* राजभाषाके संदर्भमें घातक प्रावधान २९
  * भारतीय संविधानमें निर्देशित एवं कालावधि निश्चित किए

जानेपर भी राज्यकर्ताओंद्वारा हिंदीको राष्ट्रभाषाकी श्रेणी न देना ३०
* 'राजभाषा अधिनियम १९५३, राजभाषा विधेयक १९६७ एवं राजभाषा नियम १९७६' के अनुसार किए हुए घातक प्रावधान ३०
६. हिंदीपर अंग्रेजी भाषाका आक्रमण ! **३२**
* विदेश जानेपर हिंदीकी अपेक्षा अंग्रेजीमें संवाद करनेवाले राज्यकर्ता ३२
७. भारतमें हिंदीकी दुर्दशा **३२**
* आंग्लपूजक हिंदी अभिनेता * खिलाडियोंका अंग्रेजीप्रेम ३४
* शीर्षकोंमें ही आधे उर्दू शब्दोंका प्रयोग करनेवाले समाचार-पत्र ३५
८. हिंदीका नहीं, उर्दूका समर्थन करनेवाले हिंदु ! **३६**
* मुस्लिम संस्कृतिसे जन्मी उर्दू तथा हिंदु संस्कृतिसे जन्मी हिंदी ३६
* अर्थ समझे बिना, उर्दू शब्दोंका प्रयोग करनेवाले हिंदु ! ३६
९. भाषांतरित हिंदी शब्दोंमें त्रुटियां **३७**
१०. शुद्ध हिंदी भाषाकी अनिवार्यता **३८**
* राष्ट्रभाषाके होते प्रादेशिक भाषाओकी अस्मिताएं त्यागें ! ३८
* अंतरप्रांतीय व्यवहार हेतु हिंदीका उपयोग अनिवार्य होना ३८
११. हिंदीके रक्षणार्थ प्रयत्न करनेवाले **४१**
* स्वा. सावरकरद्वारा हिंदीके रक्षणार्थ किए गए प्रयत्न ४१
* संस्कृतनिष्ठ हिंदी परिभाषाकी निर्मिति हेतु प्रयत्नशील डॉ. रघुवीर ! ४२
१२. हिंदीके रक्षणार्थ उपाय **४३**
१३. हिंदी एवं अन्य भाषा और अनिष्ट शक्तियोंका परिणाम **५१**
अध्याय २ : भारतीय एवं अंग्रेजी भाषाके अतिरिक्त विश्वकी 'एक' भाषा
१. 'एक' भाषा **६९**
२. विशेषताएं **६९**
३. 'एक' भाषाके सूक्ष्म-चित्र, सूक्ष्म-परीक्षण एवं विश्लेषण **७०**
४. 'एक' भाषाको नष्ट करना **७३**

भूमिका

राष्ट्रभाषा राष्ट्रका मनोमयकोष है । जिस राष्ट्रभाषा हिंदीने भारतीयोंको आपसमें जोडा, उस हिंदीको कृतघ्न भारतीय, विशेषतः स्वतंत्रताके पश्चात भारतके सर्वदलीय राज्यकर्ता अंग्रेजी और उर्दू भाषाकी सहायतासे नष्ट करने हेतु तत्पर हैं । सामान्य जनताको इसकी गंभीरता समझमें नहीं आती । कुछ स्थानोंपर 'बादशाह राम और बेगम सीता', ऐसे उल्लेख किए जाते हैं । अनेक हिंदु 'हे भगवान' कहनेकी अपेक्षा 'ऐ मालिक' कहते हैं ।

मुसलमान शासकोंके कालमें उर्दू सत्ताधीशोंकी भाषा बन गई, जिस कारण उसका हिंदीपर आक्रमण हुआ । तदुपरांत गांधीकी कांग्रेसके शासनकालमें हिंदीका रूपांतरण उर्दूमिश्रित हिंदी, अर्थात तथाकथित 'हिंदुस्तानी' में किया गया । इतना ही नहीं, कांग्रेसने यह भी निश्चित किया कि, हिंदीकी लिपि उर्दूकी भांति हो ।

हिंदीकी दयनीय वर्तमानस्थिति जनताको ज्ञात होनेपर दुःख होगा और क्रोध भी आएगा । तदुपरांत जब जनता इस स्थितिके कारणोंको खोजेगी, तो उसे ज्ञात होगा कि, हिंदीका विरोध करनेवाले सर्वदलीय नेता ही उसकी दयनीय स्थितिके लिए उत्तरदायी हैं और जनता भाषाक्रांति हेतु तत्पर होगी । इस भाषाक्रांति हेतु आवश्यक, हिंदीको बचानेके उपाय जनताको ज्ञात होना आवश्यक है । ये उपाय भी इस ग्रंथमें दिए हैं । यह हुआ बुद्धिसे समझनेका भाग ।

साधनाके बलपर जो सूक्ष्मसंबंधी न्यूनाधिक मात्रामें समझ सकते हैं, ऐसे लोगोंके लिए सूक्ष्म प्रयोगद्वारा संस्कृतोद्भव हिंदी भाषामें विद्यमान चैतन्य कैसे अनुभव होता है, इसकी जानकारी और कुछ उदाहरण इस ग्रंथमें दिए हैं । मराठी और हिंदी भाषा संस्कृतोद्भव होनेके कारण दोनोंमें अनेक शब्द समान हैं । अतः दोनों भाषाओंके सूक्ष्म प्रयोगोंके निष्कर्ष भी समान ही रहते हैं ।

असुरोंने वेद छुपाए, उसी प्रकार असुर प्रवृत्तिके नेताओंने संस्कृतोद्भव हिंदी भाषाको ही भारतसे नष्ट करनेका षड्यंत्र रचा है । श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि, 'भारतीयोंको, विशेषतः हिंदुओंको हिंदीका महत्त्व समझमें आए तथा अपने लाभके लिए ही सही, उसके पुनरुत्थान हेतु प्रयास करनेकी वे बुद्धि प्राप्त करें' ! **- संकलनकर्ता**